

# खान किनारे की सभ्यता पर रिसर्च करेगा आईआईटी

सात आईआईटी और यूके की चार यूनिवर्सिटी मिलकर बनाएंगे नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाने का प्लान

पत्रिका  
महाअभियान

उम्मीदों  
की खान

इंदौर @ पत्रिका

patrika.com/city

नदी के किनारों पर ही मानव सभ्यता विकसित होती है। गांव-नगर-कस्बे इन्हीं नदी किनारों पर बसते हैं। होलकरों का इंदूर भी खान नदी के किनारे ही अस्तित्व में आया। कभी निर्मल-शीतल जल के साथ कल-कल प्रवाहमान खान अब फिर चर्चा में है। 'पत्रिका' महाअभियान के बाद केंद्र और राज्य की सरकारें मिलकर इसके पुनर् स्वरूप को लौटाने में जुटी हुई हैं, वहीं आईआईटी ने भी इसके लिए हाथ बढ़ाया है। आईआईटी की टीम इस नदी के अतीत और इससे जुड़े इतिहास को खंगालेगी।

सात आईआईटी और यूके की चार यूनिवर्सिटी मिलकर नदियों के किनारे बसने वालों के योगदान व नदियों में होने वाले प्रदूषण के असर पर स्टडी करेंगे। इनमें आईआईटी, इंदौर को भी चंबल की स्टडी का जिम्मा मिला है। आईआईटी इंदौर के प्रो. नीरज मिश्रा व प्रो. प्रीति शर्मा जल्द ही खान नदी, शिप्रा नदी और

## खान नदी से शुरुआत

प्रो. मिश्रा ने बताया, सात आईआईटी और यूके की यूनिवर्सिटी मिलकर गंगा नदी के शुद्धीकरण की संभावना खोजेंगे। इसमें आईआईटी कानपुर को चंबल वाले हिस्से की जिम्मेदारी मिली है। इस स्टडी में उद्योग, घरेलू और कृषि को भी शामिल किया जाएगा। प्रो. शर्मा ने बताया स्टडी में खान नदी के किनारे रहने वालों के असर पर खास ध्यान दिया जाएगा। जगह-जगह के पानी के नमूने भी जुटाएंगे जिसकी जांच आईआईटी कानपुर करेगा। उम्मीद है, फरवरी 2016 से खान नदी पर स्टडी शुरू हो जाएगी। दूसरे हिस्से में शिप्रा की स्टडी कर चंबल तक पहुंचा जाएगा।

गंभीर नदी के आसपास बसने वाली सभ्यताओं को समझने के लिए मैदान में उतरेंगे। प्रारंभिक तैयारी के तौर पर आईआईटी में ही पढ़ रहे विनोद कुमार व नेहा सिंह खान नदी के किनारे बसने वालों पर पीएचडी कर रहे हैं। इसी रिसर्च को आईआईटी खान नदी को पुनर्जीवित करने का आधार बनाएगा।